धर्मत का युद्ध (1658 ई.) और राव रतन सिंह राठौड़ का खौफनाक अंत

लेखक / शोधकर्ता: गोविंद मालवीय (Real Hi Story)

विषय: मध्यकालीन भारतीय इतिहास, मारवाड़-मालवा इतिहास, मुगल उत्तराधिकार युद्ध

दिनांक: 10 अगस्त 2026

विषय प्रवेश

भारतीय इतिहास केवल साम्राज्य-निर्माण और युद्धों का लेखा-जोखा नहीं है, बल्कि यह वफादारी, धर्म और अभूतपूर्व शौर्य की कहानियों से भरा हुआ है। 15 अप्रैल 1658 को उज्जैन के पास लड़ा गया **धर्मत का युद्ध** (Battle of Dharmat) मुगल इतिहास का एक महत्वपूर्ण मोड़ था।

ज्यादातर इतिहासकार इस युद्ध को केवल औरंगजेब, दारा शिकोह और जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह के राजनीतिक संबंधों तक सीमित रखते हैं। लेकिन इस मैदान-ए-जंग में जिस वीर ने मुगलों के तोपखाने को छिन्न-भिन्न कर दिया और अपनी अंतिम सांस तक मौत को चुनौती दी, वे थे–**रतलाम राज्य के संस्थापक राव रतन सिंह राठौड़**।

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: उत्तराधिकार का खूनी संघर्ष

1657-58 ई. में मुगल बादशाह शाहजहाँ के गंभीर रूप से बीमार पड़ने पर उसके बेटों के बीच दिल्ली के तख्त के लिए खूनी जंग छिड़ गई:

- **दारा शिकोह:** शाहजहाँ का सबसे बड़ा बेटा, जिसे शाही सेना और आगरा दरबार का समर्थन प्राप्त था।
- **औरंगजेब व मुराद:** दक्षिण से अपनी संयुक्त सेना और घातक तोपखाने के साथ उत्तर भारत की ओर बढ़ते हुए।

© 10th Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY).

दारा शिकोह ने औरंगजेब को रोकने के लिए जोधपुर के **महाराजा जसवंत सिंह** और मुगल मनसबदार **कासिम खान** के नेतृत्व में शाही सेना भेजी। मालवा में उज्जैन से लगभग 20 किमी दूर गम्भीर नदी के तट पर **धर्मत (फतेहाबाद)** के मैदान में दोनों सेनाएं आमने-सामने हुईं।

2. राव रतन सिंह राठौड़: परिचय एवं रणनीतिक स्थिति

राव रतन सिंह राठौड़, जोधपुर के शासक 'मोटा राजा' उदयसिंह के वंशज और महेशदास के पुत्र थे।

- **अद्भुत पराक्रम:** युवावस्था में उन्होंने आगरा दरबार में एक बेकाबू पागल हाथी को अकेले अपनी कटार से वश में किया था, जिससे प्रभावित होकर शाहजहाँ ने उन्हें 'राव' की उपाधि दी।
- **रतलाम की स्थापना:** 1652 ई. में उन्होंने मालवा में **रतलाम राज्य** की नींव रखी।
- **धर्मत में भूमिका:** धर्मत के मैदान में वे शाही सेना के अग्रिम दस्ते (Vanguard) का नेतृत्व कर रहे थे।

© 10th Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY).

3. धर्मत के मैदान की भीषण वास्तविकता

15 अप्रैल 1658 को जब युद्ध शुरू हुआ:

1. **मुगल सेनापति का विश्वासघात:** शाही सेना के मुख्य मुगल सेनापति कासिम खान ने गद्दारी की और अपनी टुकड़ी को युद्ध से अलग रखा।
2. **तोपखाने का विनाश:** औरंगजेब के मुख्य तोपची मुर्शिद कुली खान की तोपों ने राजपूत घुड़सवारों पर भयंकर गोलाबारी शुरू कर दी।
3. **सेनापति का हटना:** महाराजा जसवंत सिंह बुरी तरह घायल हो गए। मारवाड़ के सरदारों ने राज्य की सुरक्षा के हित में महाराजा को जबरन मैदान से सुरक्षित स्थान (जोधपुर) भेज दिया।

4. 'द लास्ट स्टैंड': कलाई पर बांधी गईं तलवारें

महाराजा जसवंत सिंह के हटने के बाद राव रतन सिंह राठौड़ ने बची हुई राजपूत सेना की कमान अपने हाथों में ली।

चारण कवि खिड़िया जग्गा की '**वचनिका राठौड़ रतनसिंघजी री**' और कवि कुंभकर्ण के '**रतन रासो**' के अनुसार:

© 10th Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY).

आत्मघाती हमला: रतन सिंह ने सीधे औरंगजेब के तोपखाने पर हमला बोला और मुख्य तोपची मुर्शिद कुली खान को मार गिराया।

- **85 घाव:** मुगलों की गोलियों, तीरों और भालों के बीच लड़ते हुए उनके शरीर पर 85 से अधिक गहरे घाव लगे।
- **कलाइयों पर तलवारें:** युद्ध के दौरान उनके दोनों हाथों की उंगलियां कटकर अलग हो गईं। जब हथियार पकड़ना असंभव हो गया, तो उन्होंने अपने सैनिकों से कपड़ों की पट्टियों से अपनी दोनों कलाइयों पर तलवारों को कसकर बंधवाया।
- **अंतिम तांडव:** कलाई पर बंधी तलवारों को गोल-गोल घुमाते हुए वे औरंगजेब और मुराद के हाथियों की ओर बढ़े और मुगलों का कत्लेआम करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

5. औरंगजेब का कथन एवं ऐतिहासिक स्मारक

युद्ध के बाद जब औरंगजेब ने राव रतन सिंह के छिन्न-भिन्न शरीर को देखा, तो शत्रु होते हुए भी उनके शौर्य से स्तब्ध रह गया। लोक-स्मृतियों के अनुसार औरंगजेब ने कहा था:

"अगर राजपूताना में ऐसे 10 योद्धा और होते, तो भारत पर मुगलों का राज कभी नहीं होता।"

औरंगजेब के आदेश पर उनके सम्मान में धर्मत के मैदान में एक **छतरी (स्मारक)** बनवाई गई, जो आज भी उज्जैन के पास फरीदाबाद (धर्मत) में स्थित है।

© 10th Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY).

6. प्रामाणिक ऐतिहासिक संदर्भ (Primary Sources)

- **वचनिका राठौड़ रतनसिंघजी री महेसदासोत री** — कवि खिड़िया जग्गा (समकालीन डिंगल ग्रंथ)
- **रतन रासो** — कवि कुंभकर्ण (डिंगल ग्रंथ)
- **आलमगीरनामा** — मुहम्मद काजिम (आधिकारिक फारसी मुगल रिकॉर्ड)

डॉक्युमेंट कॉपीराइट एवं डिस्क्लेमर

Disclaimer: यह दस्तावेज केवल शैक्षणिक, ऐतिहासिक और शोध उद्देश्यों के लिए तैयार किया गया है। इसमें प्रस्तुत तथ्य प्रामाणिक ऐतिहासिक दस्तावेजों, डिंगल साहित्य और समकालीन ग्रंथों पर आधारित हैं। इसका उद्देश्य किसी व्यक्ति, समुदाय, जाति या धर्म की भावनाओं को ठेस पहुँचाना नहीं है।

© 10th Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY).

The Battle of Dharmat (1658 AD) & The Legendary Stand of Rao Ratan Singh Rathore

Author / Researcher: Govind Malviya (Real Hi Story)

Subject: Medieval Indian History, Marwar-Malwa History, Mughal War of Succession

Date: August 10, 2026

Executive Summary

Indian history is defined not merely by territorial conquests, but by acts of unyielding loyalty and unprecedented military valor. The **Battle of Dharmat**, fought on April 15, 1658, near Ujjain, represents one of the most critical military engagements during the Mughal War of Succession.

While conventional historiography often focuses on the political dynamics between Prince Aurangzeb, Prince Dara Shikoh, and Maharaja Jaswant Singh of Jodhpur, the tactical core of the battle was defined by **Rao Ratan Singh Rathore, the founder of the princely state of Ratlam**, who led a legendary suicidal charge against Aurangzeb's heavy artillery.

- ***© 10th Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY).***

1. Historical Context: The Mughal Succession Crisis

In 1657–1658 AD, the severe illness of Emperor Shah Jahan triggered a war among his sons for the throne of Delhi:

- **Dara Shikoh:** The eldest son, backed by the Imperial bureaucracy and state resources.
- **Aurangzeb and Murad:** Marching from the Deccan with a battle-tested army and European-designed artillery.

Dara Shikoh dispatched an imperial army under **Maharaja Jaswant Singh** of Marwar and Mughal noble **Qasim Khan** to intercept Aurangzeb. The opposing forces met at **Dharmat (Fatehabad)**, situated on the banks of the Gambhir River near Ujjain.

2. Profile: Rao Ratan Singh Rathore

Rao Ratan Singh was a direct scion of the Marwar royal family (great-grandson of 'Mota Raja' Uday Singh and son of Mahesh Das).

- **Early Exploits:** He achieved fame in his youth at Shah Jahan's court in Agra by single-handedly subduing a wild royal elephant ('Sundar') using only a dagger.

- **Foundation of Ratlam:** Impressed by his bravery, Shah Jahan granted him the title of 'Rao' and assigned him a kingdom in Malwa, where Ratan Singh established **Ratlam** in 1652 AD.
- **Role at Dharmat:** He commanded the Vanguard (frontline division) of the Imperial coalition.

© 10th Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY).

3. The Engagement at Dharmat

On the morning of April 15, 1658:

1. **Betrayal:** Qasim Khan, the joint commander, withheld his forces, betraying the imperial alliance.
2. **Artillery Barrage:** Aurangzeb's chief gunner, Murshid Quli Khan, unleashed devastating cannon fire on the Rajput cavalry ranks.
3. **Evacuation of the King:** Maharaja Jaswant Singh was severely wounded. To ensure Marwar was not left leaderless, senior chieftains forcibly evacuated him toward Jodhpur.

4. The Last Stand: Swords Bound to Wrists

Following the evacuation of Jaswant Singh, Rao Ratan Singh Rathore assumed full tactical command of the remaining forces.

As chronicled in contemporary Bardic (Dingle) texts—***Vachanika Rathor Ratan Singhji Ri*** **by Khidiya Jagga** and ***Ratan Raso*** **by Kavi Kumbhkarna**:

- **Breakthrough Charge:** Ratan Singh led a direct cavalry charge into Aurangzeb's artillery batteries, killing chief artillery officer Murshid Quli Khan.
- **85 Battlefield Wounds:** He continued fighting despite sustaining over 85 severe wounds from arrows, musket balls, and spears.
- **Swords Bound to Wrists:** When sword strikes severed his fingers, rendering him unable to grip his weapons, he ordered his men to bind his swords tightly to his wrists with cloth strips.
- **Final Rampage:** Swinging his arm-bound swords, he pushed toward the war elephants of
- Murad and Aurangzeb, inflicting severe casualties before falling on the field.

© 10th Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY).

5. Post-Battle Recognition & Memorial

Surveying the battlefield after his victory, Prince Aurangzeb paused before the fallen body of Rao Ratan Singh. Despite being enemies, Aurangzeb acknowledged his adversary's unmatched valor. Folklore records his legendary remark:

"If there had been ten more warriors like him in Rajputana, the Mughals would never have ruled India."

Aurangzeb ordered that a **Chhatri (cenotaph)** be erected in his honor at Fatehabad (Dharmat), which stands to this day near Ujjain.

6. Primary Historical References

- **Vachanika Rathor Ratan Singhji Ri Maheshdasot Ri** — Khidiya Jagga (Contemporary Dingle text)
- **Ratan Raso** — Kavi Kumbhkarna (Historical poem)
- **Alamgirnama** — Muhammad Kazim (Official Mughal record)

© 10th Aug. 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY).